(ISSN: 2582-5526) www.thevoiceofcreativeresearch.com

The Voice of Creative Research

Vol. 7 & Issue 1 (January 2025)

https://doi.org/10.53032/tvcr/2025.v7n1.11

CONFERENCE RESEARCH ARTICLE

पालि साहित्य, संस्कृति और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के अंतर्संबंध: प्राचीन ज्ञान और आधुनिक नवाचार का संगम

(Interrelationship between Pali Literature, Culture, and Artificial Intelligence: Confluence of Ancient Wisdom and Modern Innovations)

डॉ. राहुल अमृतराज

सहायक प्राध्यापक (पालि)

पालि-विभाग, बी.डी.कॉलेज (पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय की अंगीभूत ईकाई),

पटना, बिहार

Abstract

This research paper focuses on the interplay between Pali literature and Artificial Intelligence (AI), exploring the possibilities where ancient Buddhist philosophy and modern technological innovations converge. Pali literature, especially the Tripitaka, presents profound principles related to ethics, meditation, and consciousness, which could assist in the moral and philosophical development of AI. The three divisions of Tripitaka—Vinayapitaka, Suttapitaka, and Abhidhammapitaka—could serve as guiding principles for ethical decision-making and self-improvement mechanisms in AI. Concepts like the Noble Eightfold Path, Vipassana, and Anicca could aid in making AI more sensitive and morally responsible. Recently recognized as a classical language by the Indian government, Pali opens new avenues in AI and Natural Language Processing (NLP). AI-based language translation, ethical algorithms, and digital preservation of Pali literature can play a crucial role in its conservation and dissemination. This research bridges cooperation between Pali literature and AI from ethical, cultural, and technical perspectives, potentially making AI development more humane and empathetic in the future.

Keywords: Pali literature, Artificial Intelligence (AI), Tripitaka, ethics and meditation, Anicca and Anatta, NLP (Natural Language Processing), Vipassana, digital library, cultural preservation, ethical AI

The Voice of Creative Research
Vol. 7 & Issue 1 (January 2025)

सारांश

यह शोध पत्र पालि साहित्य और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के बीच अंतर्संबंध पर केंद्रित है, जहां प्राचीन बौद्ध दर्शन और आधुनिक तकनीकी नवाचार के समागम की संभावनाओं पर विचार किया गया है। पालि साहित्य, विशेष रूप से त्रिपिटक, नैतिकता, ध्यान और चेतना से जुड़े गहन सिद्धांत प्रस्तुत करता है, जो AI के नैतिक और दार्शनिक विकास में सहायक हो सकते हैं। **त्रिपिटक** के तीन भाग—विनयपिटक, सुत्तपिटक और अभिधम्मपिटक, AI के नैतिक निर्णय निर्माण और आत्म-सुधार तंत्र के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो सकते हैं। अष्टांगिक मार्ग, विपस्सना और अनिच्चा जैसे सिद्धांत AI को संवेदनशील और नैतिक रूप से उत्तरदायी बनाने में सहायक हो सकते हैं। पालि भाषा को हाल ही में भारत सरकार द्वारा शास्त्रीय भाषा के रूप में मान्यता दी गई है, जिससे AI और NLP (Natural Language Processing) में नई संभावनाएं खुली हैं। AI आधारित भाषा अनुवाद, नैतिक एल्गोरिदम और डिजिटल संग्रहालय पालि साहित्य के संरक्षण और प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। यह शोध पालि साहित्य और AI के बीच सहयोग को एक नैतिक, सांस्कृतिक और तकनीकी दृष्टिकोण से सार्थक बनाता है, जो भविष्य में AI के विकास को अधिक मानवीय और संवेदनशील बनाने में सहायक होगा।

प्रासंगिक कीवर्ड्स- पालि साहित्य, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), त्रिपिटक, नैतिकता और ध्यान, अनिच्चा और अनात्मा, NLP (Natural Language Processing), विपस्सना, डिजिटल संग्रहालय, सांस्कृतिक संरक्षण, एथिकल AI

प्रस्तावना

पालि साहित्य बौद्ध धर्म और प्राचीन भारतीय परंपरा का अभिन्न हिस्सा है, जो ध्यान, नैतिकता और चेतना के गहन पहलुओं पर प्रकाश डालता है। दूसरी ओर, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence - AI) विज्ञान और प्रौद्योगिकी का एक ऐसा क्षेत्र है, जो मानव मस्तिष्क की कार्यप्रणाली को समझने और उसे तकनीकी रूप में साकार करने की दिशा में कार्य करता है। दोनों क्षेत्रों के बीच परस्पर संवाद न केवल एआई को अधिक नैतिक और मानवीय बना सकता है, बल्कि पालि साहित्य की गहरी शिक्षाओं को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत करने का माध्यम भी बन सकता है। यह शोध पत्र इस पर विचार किया जायेगा कि कैसे पालि साहित्य के नैतिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक सिद्धांत एआई के विकास को प्रेरित कर सकता हैं और एआई प्राचीन सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित और प्रचारित करने में सहायक हो सकता है।

पालि साहित्य: संस्कृति और नैतिकता का स्रोत-

पालि साहित्य मुख्यतः त्रिपिटक (तिपिटक) जो बौद्ध धर्म के प्रमुख ग्रंथों का संग्रह है, जिसे बौद्ध साहित्य का आधार माना जाता है। पाँचों बौद्ध संगीतियों का संगायन तथा अंत में जिसका अभिलेखन हुआ, वह आज हमें त्रिपिटक के रूप में प्राप्त है। यह "त्रि-ति" (तीन) और "पिटक" (टोकरी, पिटारी या संग्रह) से बना है[1], जिसका अर्थ है "तीन संग्रह"। इन ग्रंथों में भगवान् बुद्ध के उपदेश और उनके अनुयायियों द्वारा संकलित शिक्षाएं संग्रहीत हैं। पिटक शब्द पात्र एवं पात्रगत वस्तु का द्योतन करते हुए दो अर्थों से समुपेत है। अतः वह पात्र जो बुद्धवचन का द्योतन, धारण एवं संरक्षण करता है, पिटक कहलाता है। आचार्य बुद्धघोष ने इस तथ्य पर प्रकाश डालते हुए कहा है-

पिटकं पिटकत्थविद्, परियत्तिभाजनत्थतो आहु।
तेन समोधानेत्वा तयो पि, विनयादयो ञेय्या ति॥[2]

---

[1] **अभिधम्मत्थसंगहो** (प्रथम भाग), प्रो. रामशंकर त्रिपाठी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, द्वितीय संस्करण, 1991,पृष्ठ सं.-6.

[2] **निदानकथा**, डॉ. महेश तिवारी, चौखम्भा संस्कृत सीरीज ऑफिस, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1970, पृष्ठ सं.-15.

इस प्रकार त्रिविध शिक्षा- विनयपिटक, सुत्तपिटक एवं अभिधम्मपिटक को धारण करते हुए धारक एवं धार्य दोनों इससे अभिप्रेत हैं।

त्रिपिटक के तीन भाग ये है-

(क) **विनयपिटक-** इसमें बौद्ध भिक्षुओं और भिक्षुणियों के लिए आचार संहिता (नियम) दी गई है। यह अनुशासन और समुदाय के सुचारु संचालन के लिए आवश्यक नियमों का संग्रह है। आचार्य बुद्धघोष ने इसकी व्याख्या करते हुए कहा है कि -

विविधविसेसनयत्ता, विनयनतो चेव कायवाचानं।
विनयत्थविदूहि अयं, विनयो विनयो ति अक्खातो।।[3]

(ख) **सुत्तपिटक-** इसमें बुद्ध द्वारा दिए गए उपदेश और धर्म के मूल सिद्धांत संग्रहीत हैं। यह उपदेश कवितात्मक और गद्य रूप में हैं। इसमें धर्म, ध्यान और नैतिक आचरण से जुड़े कई विषयों का वर्णन है। इसके स्वरूप की चर्चा करते हुए बुद्धघोष ने कहा है-

सुत्तानं सूचनतो सुवुत्ततो, सवनतो च सूदनतो।
सुत्ताणा सुत्तसभागतो च, सुत्तं सुत्तं ति अक्खातं ति।।[4]

(ग) **अभिधम्मपिटक-** यह बौद्ध धर्म के दार्शनिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण पर केंद्रित है। इसमें धर्म के गहन विचार और बौद्ध दर्शन के विश्लेषणात्मक व्याख्यान हैं। आचार्य बुद्धघोष ने इसकी चर्चा करते हुए कहा है कि-

यं एत्थ वुड्ढिमन्तो सलक्खणा पूजिता परिच्छिन्ना।
वुत्ताधिका च धम्मा अभिधम्मो तेन अक्खातो॥[5]

इन ग्रंथों में मानव मनोविज्ञान, चेतना, नैतिकता और आत्म-प्रबोधन से संबंधित गहन विचार हैं।

1. चेतना और प्रज्ञा की अवधारणा

पालि साहित्य में '**चित्त**' और '**प्रज्ञा**' का उल्लेख है, जो मानसिक विकास और आत्म-जागरूकता का प्रतीक हैं। **चित्त**– **'आरम्मणं चिन्तेतीति चित्तं, विजानातीति अत्थो'**[6] अर्थात् जो आलम्बन को जनता है, वह चित्त है। **प्रज्ञा** के बारे में विसुद्धिमग्ग में कहा गया है-

सीले पतिट्ठाय नरो सपञ्ञो चित्तं पञ्ञं च भावयं।
आतापी निपको भिक्खु सो इमं विजटये जटं ति॥[7]

शील (सदाचार) में प्रतिष्ठित हो कर जो प्रज्ञावान् पुरुष जब समाधि-प्रज्ञा की भावना करता है, तब वह उद्योगी तथा ज्ञानवान् पुरुष भिक्षु (त्यागी) हो कर इस जञ्जाल (भवबन्धन) को सुलझा लेता है। प्रज्ञा का वर्तमान में अभीष्ट (प्रसङ्गप्राप्त) अर्थ है- **कुसलचित्तसम्पयुत्तं विपस्सनाञाणं पञ्ञा**[8] अर्थात् कुशलचित्त से युक्त विपस्सना ज्ञान ही 'प्रज्ञा' कहलाता है। इस प्रकार कह सकतें है कि भगवान् बुद्ध के बताये गए चारआर्य सत्यों का ज्ञान भी प्रज्ञा ही है- यथा **दुक्खसच्चं आरब्भ पवत्तं आणं दुक्खे आणं। दुक्खसमुदयं आरब्भ पवत्तं जाणं दुक्खसमुदये आणं। दुक्खनिरोधं आरब्ध पवत्तं जाणं दुक्खनिरोधे**

---

[3] **वही**, पृष्ठ सं.-16.

[4] **वही**, पृष्ठ सं.-16.

[5] **वही**, पृष्ठ सं.-18.

[6] **अभिधम्मत्थसंगहो** (प्रथम भाग), प्रो. रामशंकर त्रिपाठी, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, द्वितीय संस्करण, 1991, पठम परिच्छेद पृष्ठ सं.-11.

[7] **विसुद्धिमग्गो** (प्रथम भाग), स्वामी द्वारिकादासशास्त्री, बौद्ध भारती, वाराणसी, अभिनव संस्करण, 2009, पृष्ठ सं.-14.

[8] **विसुद्धिमग्गो** (तृतीय भाग), स्वामी द्वारिकादासशास्त्री, बौद्ध भारती, वाराणसी, अभिनव संस्करण, 2006, पृष्ठ सं.-4.

आणं। दुक्खनिरोधगामिनि पटिपदं आरब्भ पवत्तं आणं दुक्खनिरोधगामिनिया पटिपदाय आणं ति। एवं चतूसु सच्चेसु आणवसेन चतुब्बिधा।[9] (अर्थात् दुःखसत्य को जानने में प्रवृत्त ज्ञान दुःखविषयक ज्ञान कहलाता है। दुःख के समुदय (उत्पत्ति) को जानने में प्रवृत्त ज्ञान दुःखसमुदयविषयक ज्ञान कहलाता है। दुःख के निरोध (पुनरुत्पाद को रोकने) में प्रवृत्त ज्ञान दुःखनिरोधविषयक ज्ञान कहलाता है। तथा दुःखनिरोधगामिनी प्रतिपदा (मार्ग) के जानने में प्रवृत्त ज्ञान दुःखनिरोधगामिनी प्रतिपदा विषयक ज्ञान कहलाता है। इस प्रकार सत्यों के आधार पर ज्ञान **(प्रज्ञा)** चतुर्विध कहलाता है।)

बौद्ध साहित्य में 'विपस्सना' (ध्यान) जैसे अभ्यास मानसिक स्थिरता और आत्मनिरीक्षण को बढ़ावा देते हैं। यह दृष्टिकोण **एआई** में स्वायत्तता (Autonomy) और अनुकूलनशीलता (Adaptability) के विकास में सहायक हो सकता है।

2. नैतिकता और अष्टांगिक मार्ग

अष्टांगिक मार्ग में सही दृष्टि, सही विचार, सही कार्य और सही ध्यान जैसी शिक्षाएं शामिल हैं। धम्मपद के मग्गवग्ग में कहा गया है-

मग्गानंठङ्गिको सेट्ठो सच्चानं चतुरो पदा।
विरागो सेट्ठो धम्मानं द्विपदानं च चक्खुमा॥[10]

अर्थात् निर्वाण गामी जितने मार्ग हैं उनमें सम्यक् दृष्टि आदि अष्टांगिक मार्ग श्रेष्ठ हैं। ये नैतिक शिक्षाएं **एआई** एल्गोरिदम में निर्णय प्रक्रिया (Decision Making) और एथिकल प्रोग्रामिंग को प्रेरित कर सकती हैं।

3. अनिच्चा (Impermanence) और अनात्मा (Non-Self)

पालि साहित्य का यह दर्शन एआई को विकसित करने के लिए महत्वपूर्ण है, जहां मशीन लगातार खुद को सुधारता हैं और नए परिवेश के अनुसार अनुकूलन करता हैं। पालि साहित्य में अनिच्चा और अनात्मा त्रिलक्षण (तीन लक्षण-अनिच्चा, दुक्खा, अनत्ता) का हिस्सा हैं। बुद्ध ने **अनिच्चा के सिद्धांत** का वर्णन करते हुये धम्मपद में की है-

सब्बे सङ्खारा अनिच्चा ति, यदा पञ्ञाय पस्सति।
अथ निब्बिन्दति दुक्खे, एस मग्गो विसुद्धिया॥[11]

अर्थात् जब कोई साधक प्रज्ञा द्वारा **'सभी संस्कार अनित्य हैं'**- ऐसा साक्षात्कार कर लेता है तब उसको दुःखों से विरक्ति हो जाती है। यही चित्तविशुद्धि का वास्तविक मार्ग है। बुद्ध ने **अनत्ता के सिद्धांत** का वर्णन करते हुये धम्मपद में की है-

सब्बे धम्मा अनत्ता ति, यदा पञ्ञाय पस्सति।
अथ निब्बिन्दति दुक्खे, एस मग्गो विसुद्धिया॥[12]

अर्थात् जब कोई ध्यानी अपनी प्रज्ञा द्वारा **'सभी धर्म अनात्म हैं'** - ऐसा साक्षात् कर कर लेता है तब वह दुःखों के प्रति वैराग्यवान् हो जाता है। यही चित्तविशुद्धि का सर्वोत्तम मार्ग है। बुद्ध ने **दुक्खा के सिद्धांत** का वर्णन करते हुये धम्मपद में की है-

सब्बे सङ्खारा दुक्खा ति, यदा पञ्ञाय पस्सति।
अथ निब्बिन्दति दुक्खे, एस मग्गो विसुद्धिया॥[13]

---

[9] **विसुद्धिमग्गो** (तृतीय भाग), स्वामी द्वारिकादासशास्त्री, बौद्ध भारती, वाराणसी, अभिनव संस्करण, 2006, पृष्ठ सं.-10.

[10] **धम्मपद,** भिक्षु धर्मरक्षित, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी, तृतीय संस्करण 1983. गाथा संख्या 20/1.

[11] **धम्मपद,** भिक्षु धर्मरक्षित, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी, तृतीय संस्करण 1983. गाथा संख्या-277.

[12] **वही**, गाथा संख्या-279.

[13] **वही**, गाथा संख्या-278.

अर्थात् जब कोई साधक प्रज्ञा द्वारा "सभी संस्कार दुःखमय हैं" - ऐसा साक्षात्कार कर लेता है, तब उसको दुःखों के प्रति घृणा (वैराग्य) हो जाता है। यही चित्तविशुद्धि का वास्तविक मार्ग है। अनिच्चा हमें सिखाता है कि कुछ भी स्थायी नहीं है। अनात्मा हमें अहंकार के भ्रम से मुक्त करता है। इन दोनों सिद्धांतों का उद्देश्य है दुःख की वास्तविकता को समझना और निर्वाण प्राप्त करना।

पाली के **अनिच्चा, दुक्खा, अनत्ता** जैसे गहन दार्शनिक सिद्धांतों को AI में लागू करना न केवल तकनीकी बल्कि नैतिक दृष्टिकोण से भी अत्यधिक प्रासंगिक है। इन सिद्धांतों को AI में स्थापित करने से तकनीक केवल स्मार्ट नहीं होगी, बल्कि वह गहरी नैतिकता और दार्शनिक समझ से युक्त होगी। इससे एक ऐसा AI विकसित हो सकता है जो मानवता के मूलभूत सत्य, जैसे अनित्यता, कष्ट और अस्थायी स्वभाव को समझते हुए निर्णय ले और समाज के लिए अधिक उपयोगी हो।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता: एक सांस्कृतिक और नैतिक उपकरण-

एआई ने भाषा, सांस्कृतिक विरासत और दार्शनिक ग्रंथों के संरक्षण और प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पालि भाषा को शास्त्रीय भाषा के रूप वर्ष-2024 में भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त होना भारतीय संस्कृति और बौद्ध परंपरा के लिए एक ऐतिहासिक कदम है। इसकी गहन व्याकरणिक संरचना और प्राचीन साहित्य AI और NLP (Natural Language Processing) के क्षेत्र में नई खोज और नवाचार के द्वार खोल सकती है। यह कदम भाषा संरक्षण और तकनीकी उन्नति के संगम का प्रतीक है। पालि साहित्य और एआई के इस अंतर्संबंध को तीन प्रमुख क्षेत्रों में देखा जा सकता है:-

1. **भाषा संरक्षण और अनुवाद-**

पालि साहित्य का डिजिटलीकरण- एआई आधारित टेक्स्ट प्रोसेसिंग और मशीन लर्निंग तकनीकें पालि साहित्य को डिजिटल रूप में संरक्षित करने और इसे वैश्विक स्तर पर प्रचारित करने में मदद कर रही हैं।

मल्टी-लिंगुअल अनुवाद- पालि ग्रंथों का स्वचालित अनुवाद विभिन्न भाषाओं में संभव हो रहा है, जिससे इनके ज्ञान को व्यापक समाज तक पहुंचाया जा सकता है।

2. **नैतिक एआई (Ethical AI)**

धम्मपद और नैतिकता- धम्मपद में उल्लिखित नैतिक सूत्र **एआई** के लिए नैतिक एल्गोरिदम के विकास में सहायक हो सकते हैं। धम्मपद में एक गाथा से नैतिकता के सार समझाते हुए बुद्ध कहते हैं-

सब्बपापस्स अकरणं, कुसलस्स उपसम्पदा।
सचित्तपरियोदपनं, एतं बुद्धान सासनं।।[14]

सभी पापों (अधर्म) को त्यागना, शुभ (सत्कर्म) को अपनाना और मन को शुद्ध करना– यही बुद्ध का सच्चा उपदेश है। यह गाथा नैतिकता का सार बताती है। नैतिक जीवन का अर्थ केवल गलतियों से बचना नहीं है, बल्कि अच्छाई को अपनाना और मन को शुद्ध रखना भी है। Ethical AI का उद्देश्य है ऐसे आचरण का पालन करना जो मानवता के कल्याण के लिए हो। यह गाथा AI के लिए प्रासंगिक है, क्योंकि AI को सत्य (सही डेटा) और असत्य (त्रुटिपूर्ण डेटा) के बीच अंतर समझने की आवश्यकता है। यदि AI को असत्य (बायस्ड डेटा) दिया जाए, तो वह गलत परिणाम दे सकती है, जो अनैतिक होगा।

[14] **धम्मपद,** भिक्षु धर्मरक्षित, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी, तृतीय संस्करण 1983. गाथा संख्या-183.

The Voice of Creative Research
Vol. 7 & Issue 1 (January 2025)

पालि भाषा का एथिकल AI में उपयोग उसके नैतिक और दार्शनिक आधार के कारण अत्यंत महत्वपूर्ण हो सकता है। पालि में बौद्ध धर्म के त्रिपिटक और अन्य ग्रंथों में नैतिकता, करुणा और अहिंसा जैसे मूलभूत सिद्धांत विस्तार से वर्णित हैं। ये सिद्धांत AI को नैतिक निर्णय लेने और मानवता-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

(क) करुणा और सहानुभूति- पालि ग्रंथ करुणा और सहानुभूति जैसे मूल्यों को सिखाते हैं, जो AI को उपयोगकर्ताओं के प्रति अधिक संवेदनशील और मानवीय बना सकते हैं। कैसी करुणा यथा- **'पर दुक्खे सति साधूनं हदयकम्पनं करोती ति करुणा'।**[15] अर्थात् दूसरों को दुःखी देखकर जो साधु पुरुषों के हृदय में कम्पन उत्पन्न कर देती है वह 'करुणा' है। या दूसरों के दुःख को जो नष्ट कर देती है वह करुणा है। ऐसे मूल्य ही AI को अधिक उपयोगी, संवेदनशील और मानवीय बना सकता है।

(ख) निष्पक्षता और तटस्थता- पालि साहित्य का दर्शन, विशेष रूप से बुद्ध के उपदेश, निष्पक्षता और तटस्थता पर गहराई से केंद्रित हैं। यह दृष्टिकोण समता (Equanimity) और अकुशलचित्त (Unbiased Mind) के आदर्शों पर आधारित है। पालि साहित्य में सिखाया गया है कि व्यक्ति को अपने निर्णय और दृष्टिकोण को राग-द्वेष-मोह से मुक्त रखना चाहिए। AI की निष्पक्षता के संदर्भ में, पालि साहित्य के सिद्धांत अत्यंत प्रासंगिक हो जाते हैं। यदि AI को पूर्वाग्रह से मुक्त बनाना है, तो इसे तथ्यों पर आधारित निर्णय लेने और समता भाव को अपनाने का तंत्र विकसित करना होगा। यह सिद्धांत अप्पमाद अर्थात् (सावधानी) और 'सम्यक दृष्टि' की अवधारणाओं से प्रेरित हो सकता है, जो हर पहलू का तटस्थ आकलन करने पर बल देते हैं। धम्मपद में कहा गया है, यथा- **अप्पमादो अमतपदं, पमादो मच्चुनो पदं। अप्पमत्ता न मीयन्ति, ये पमत्ता यथा मता॥**[16] (अर्थात् अप्रमाद (साधना या चर्या में भूल न होना) अमृत का मार्ग है। तथा प्रमाद मृत्यु का मार्ग है। अप्रमादी (प्रमाद न करने वाले) का (वास्तविक) मरण नहीं होता।)

(ग) उत्तरदायित्व- बौद्ध शिक्षाओं में नैतिक जिम्मेदारी पर जोर दिया गया है , जो हमें धम्मपद, सुत्तनिपात, जातक, विसुद्धिमग्ग इत्यादि ग्रंथों में व्यापक रूप में मिलता है, जो AI को ऐसे तंत्र बनाने में मदद करेगा जो मानव समाज के प्रति उत्तरदायी हों।

(घ) मानव कल्याण का उद्देश्य- एथिकल AI का मूल लक्ष्य मानव कल्याण है, जिसे पालि के शिक्षण से प्रेरित कर बेहतर बनाया जा सकता है।

करुणा-आधारित एआई- पालि साहित्य की करुणा और सह-अनुभूति की अवधारणाएं एआई सिस्टम को अधिक संवेदनशील और मानवीय बना सकती हैं।

पालि गाथाओं में करुणा केवल एक नैतिक गुण नहीं, बल्कि कार्य और निर्णय का आधार है। Ethical AI को इन्हीं गाथाओं के प्रकाश में विकसित करना चाहिए, ताकि यह मानवता के लिए न्याय, समानता और कल्याण का माध्यम बने। पालि साहित्य में करुणा (सहानुभूति और दूसरों की पीड़ा को समझने की भावना) पर आधारित गाथाएँ बुद्ध के महत्वपूर्ण शिक्षाओं में से हैं। करुणा केवल एक भावना नहीं, बल्कि सही कार्यों और निर्णयों की प्रेरणा है। धम्मपद और अन्य पालि ग्रंथों से करुणा पर कई गाथाएँ हैं जो AI में उपयोग किया जाना चाहिए-

सबे तसन्ति दण्डस्स, सबे भायन्ति मच्चुनो।
अत्तानं उपमं कत्वा, न हनेय्य न घातये।।[17]

[15] **बौद्धमनोविज्ञान**, प्रो. ब्रह्मदेव नारायण शर्मा, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 2007, पृष्ठ सं.-214.

[16] **धम्मपद,** भिक्षु धर्मरक्षित, मोतीलाल बनारसी दास, वाराणसी, तृतीय संस्करण 1983. गाथा संख्या-21.

[17] **वही**, गाथा संख्या-129.

अर्थात्-सभी प्राणी दंड से डरते हैं, सभी मृत्यु से डरते हैं। अपने आपको उनके स्थान पर रखकर न किसी को हानि पहुँचाएं और न किसी को मारें। यह गाथा करुणा के आधार पर सही आचरण की शिक्षा देती है। दूसरों की पीड़ा को समझने और उन्हें अपने समान मानकर कार्य करना ही सच्ची करुणा है।

AI के संदर्भ में उदाहरण-AI सिस्टम में यह सिद्धांत लागू होता है, जब AI को निर्णय लेने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। यदि AI स्वास्थ्य सेवाओं (जैसे डायग्नोस्टिक AI) में उपयोग किया जा रहा हो, तो इसे इस प्रकार डिज़ाइन किया जाना चाहिए कि यह हर व्यक्ति की आवश्यकताओं और सीमाओं को समझे और किसी के साथ भेदभाव न करे। AI चैटबॉट्स को इस तरह प्रोग्राम किया जाना चाहिए कि वे उपयोगकर्ताओं की मानसिक स्थिति को पहचानें और संवेदनशीलता के साथ उत्तर दें, विशेषकर जब कोई उपयोगकर्ता संकट या अवसाद में हो।

सुखकामानि भूतानि, यो दण्डेन विहिंसति।
अत्तनो सुखमेसानो, पेच्च सो न लभते सुखं।।[18]

अर्थात् सभी प्राणी सुख चाहते हैं। जो उन्हें दुख पहुँचाता है, वह स्वयं भी सुख प्राप्त नहीं कर सकता। संदर्भ:-यह गाथा इस बात पर बल देती है कि करुणा से रहित कर्म न केवल दूसरों को, बल्कि स्वयं को भी हानि पहुँचाते हैं।

AI के संदर्भ में उदाहरण-AI को इस तरह बनाया जाना चाहिए कि वह मानव-हित को सर्वोपरि रखे। उदाहरण के लिए, Facial Recognition AI का दुरुपयोग किसी विशेष समुदाय को लक्षित करने या उनकी स्वतंत्रता को बाधित करने के लिए न हो। Autonomous Weapons जैसे AI आधारित उपकरण करुणा के विपरीत हैं, क्योंकि उनका उद्देश्य केवल हानि पहुँचाना है। AI का उपयोग केवल मानवता के कल्याण के लिए होना चाहिए।

3. पालि साहित्य से प्रेरित एआई मॉडल-

पालि साहित्य की शिक्षाओं को एआई मॉडल के लिए प्रेरणा के रूप में उपयोग किया जा सकता है-

विपस्सना और मशीन लर्निंग- पालि साहित्य के विपश्यना सिद्धांत AI के लिए एक नैतिक और तकनीकी मार्गदर्शक बन सकते हैं। यह AI को न केवल तटस्थ और सटीक बना सकता है, बल्कि उसे संवेदनशील, जिम्मेदार और मानव-केंद्रित भी बना सकता है। **विपस्सना** के 'साक्षी भाव' (Mindful Awareness) और 'सम्यक दृष्टि' (Right View) जैसे गुण AI को एक नैतिक साथी और समाज के लिए उपयोगी उपकरण में परिवर्तित कर सकते हैं। 'ध्यान' के सिद्धांत को डेटा प्रोसेसिंग और एल्गोरिदम सुधार में लागू किया जा सकता है।

अनालयो (Objective Thinking)- पालि भाषा का "ऑब्जेक्टिव थिंकिंग" में उपयोग इसकी तर्कपूर्ण संरचना और स्पष्ट विचारों की अभिव्यक्ति के कारण बेहद प्रभावी हो सकता है। पालि ग्रंथों में बौद्ध दर्शन और तर्कशास्त्र की गहन व्याख्या मिलती है, जो किसी समस्या को पूर्वाग्रह से मुक्त होकर तटस्थ दृष्टिकोण से देखने की क्षमता विकसित करती है। ऑब्जेक्टिव थिंकिंग में पालि का प्रयोग एआई को निष्पक्षता, तटस्थता, और तथ्य आधारित निर्णय लेने के लिए प्रशिक्षित कर सकता है। इसकी भाषागत संरचना एआई को जटिल मुद्दों का विश्लेषण करने और स्पष्ट समाधान निकालने में सहायता प्रदान कर सकती है। एआई में बायस (Bias) को हटाने और निर्णय प्रक्रिया को निष्पक्ष बनाने के लिए।

पालि साहित्य और एआई का अंतर्संबंध: व्यावहारिक उदाहरण-

1. ध्यान आधारित एआई (Mindful AI)-

पालि साहित्य के ध्यान और आत्मनिरीक्षण के सिद्धांतों को एआई में शामिल कर "माइंडफुल एआई" विकसित किया जा सकता है। पालि भाषा का 2024 में शास्त्रीय भाषा के रूप में उभरना "माइंडफुल एआई" के विकास में महत्वपूर्ण

[18] **वही**, गाथा संख्या-131.

भूमिका निभा सकता है। पालि में बौद्ध धर्म के ग्रंथों का समृद्ध संग्रह है, जो ध्यान, करुणा और मानसिक शांति पर आधारित है। ये ग्रंथ एआई को नैतिक मूल्यों, सहानुभूति और mindful computing सिखाने में मदद कर सकते हैं।

इसके अलावा, पालि भाषा के सरल और स्पष्ट व्याकरणिक ढांचे का उपयोग एआई को नैतिकता और निर्णय लेने के लिए बेहतर समझ विकसित करने में किया जा सकता है। यह मानव-केंद्रित और संतुलित एआई सिस्टम के निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकता है। ऐसे एआई सिस्टम मानसिक स्वास्थ्य, भावनात्मक बुद्धिमत्ता और तनाव प्रबंधन में सहायक हो सकते हैं।

2. पालि साहित्य का डिजिटल संग्रहालय-

एआई का उपयोग कर पालि साहित्य का एक डिजिटल संग्रहालय तैयार किया जा सकता है, जहां लोग प्राचीन ग्रंथों को वर्चुअल रूप में पढ़ और समझ सकें।

3. संवादात्मक एआई (Conversational AI)-

पालि साहित्य पर आधारित चैटबॉट्स और वॉयस असिस्टेंट विकसित किए जा सकते हैं, जो ध्यान, नैतिकता और बौद्ध दर्शन पर संवाद कर सकें।

संभावनाएं और चुनौतियां

संभावनाएं:-

1. **नैतिकता का समावेश**: पालि साहित्य एआई को एक नैतिक और मानवीय दिशा प्रदान कर सकता है।
2. **सांस्कृतिक संरक्षण:** पालि साहित्य और बौद्ध दर्शन को डिजिटल रूप में संरक्षित कर अगली पीढ़ियों के लिए उपलब्ध कराया जा सकता है।
3. **ग्लोबल संवाद:** एआई की मदद से पालि साहित्य को वैश्विक समुदाय तक पहुंचाया जा सकता है।

चुनौतियां:-

1. **सांस्कृतिक संदर्भ:** प्राचीन ग्रंथों के सांस्कृतिक और भाषाई संदर्भों को तकनीकी भाषा में अनुवाद करना कठिन है।
2. **नैतिकता बनाम व्यावसायिकता:** एआई में नैतिकता का समावेश करते समय व्यावसायिक लाभ को प्राथमिकता देना।
3. **डेटा और संसाधन सीमाएं:** पालि साहित्य के डिजिटलीकरण और व्याख्या के लिए उच्च गुणवत्ता वाले डेटा की आवश्यकता है।

निष्कर्ष:-

पालि साहित्य और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के बीच का अंतर्संबंध यह दर्शाता है कि प्राचीन और आधुनिक ज्ञान एक-दूसरे को प्रेरित और समृद्ध कर सकते हैं। पालि साहित्य में निहित नैतिकता, ध्यान और चेतना की शिक्षाएं **एआई** को अधिक मानवीय और संवेदनशील बना सकती हैं। वहीं, एआई के माध्यम से पालि साहित्य को संरक्षित और वैश्विक स्तर पर प्रचारित किया जा सकता है। पाली भाषा को हाल ही में भारत सरकार द्वारा शास्त्रीय भाषा घोषित किया गया है जो आने वाले समय में लिए AI टूल के लिए भी काफी महत्वपूर्ण घोषित होने वाला है।

यह अध्ययन प्राचीन ज्ञान और आधुनिक तकनीकी नवाचार के संगम का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है, जो न केवल मानवता को लाभान्वित करेगा, बल्कि एक नैतिक और सांस्कृतिक भविष्य का मार्ग प्रशस्त करेगा।